इस पुरानी दुनिया से जब जीते जी मर जाओगे
तभी तो अपने घर बिना सजा खाये जा पाओगे
आओ इस पुरानी दुनिया के आकर्षण को भूलें
बाबा की याद में अतीन्द्रिय सुख का झूला झूलें
अच्छे पुरुषार्थी बच्चों की सबसे बड़ी निशानी
अभ्यास करके वो बनते रहेंगे देहि अभिमानी
लक्ष्य रहे कोई भी देहधारी कभी न आए याद
अब व्यर्थ की बातों में नहीं करो समय बर्बाद
बाबा को याद करो और स्वदर्शन चक्र घुमाओ
अब इस पतित दुनिया से अपना लंगर उठाओ
मिला बाप की तरफ से आत्माओं को फरमान
आत्म अभिमानी बनने में समझो अपनी शान
स्मृति में रखो सदा अपना पवित्र आत्मिक रूप
कभी भी नहीं लगेगी फिर माया रावण की धुप
ॐ शांति